496 वाँ सफलतम अंक

प्रतियोगिता दर्पण
हिन्दी मासिक

वर्ष 42
पंचम अंक
दिसम्बर 2019

इस अंक में...

9 स्वावलम्बी बनो !
10 राष्ट्रीय घटनाक्रम
15 अन्तर्राष्ट्रीय घटनाक्रम
23 आर्थिक-वाणिज्यिक परिदृश्य
36 नवीनतम सामान्य ज्ञान
44 खेलकूद
51 विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी

फोकस

52 (i) भूख और जलवायु परिवर्तन की चुनौती
55 (ii) उच्च शिक्षा में डिजिटल पहलें
58 (iii) बौद्धिक सम्पदा अधिकारों का संरक्षण
62 युवा प्रतिभाएं
67 स्मरणीय तथ्य
70 विश्व परिदृश्य
75 वर्तमान में चर्चित विभिन्न अवधारणाएं
78 भारत के प्रमुख ऐतिहासिक व्यक्तित्व

लेख

81 सांविधानिक लेख—संविधान के अधीन मौलिक अधिकार व कर्तव्य
83 सामयिक लेख—जी-7 शिखर सम्मेलन एवं भारत की भागीदारी
85 समसामयिक लेख—ई-सिगरेट : नशे की नई महामारी
87 भाषायी लेख—प्रतिस्पर्द्धात्मक प्रतियोगिताओं में तकनीकी लेखन के लिए हिन्दी माध्यम के चलन की सम्भावनाएं एवं उपयोगिताएं
88 शिक्षादर्शन लेख—वर्तमान परिप्रेक्ष्य में महात्मा गांधी के शैक्षिक विचारों की प्रासंगिकता
91 साहित्यिक लेख—जन-जन की भाषा बनती हिन्दी
92 पर्यावरणीय लेख—(i) सुनामी, चेतावनी एवं उपाय
93 (ii) स्थलीय एवं जलीय वनस्पति (पौधों) का विवरण
95 कृषि लेख— (i) कृषि विकास और किसान कल्याण
97 (ii) कृषक समृद्धि हेतु कृषि का व्यावसायीकरण
100 अन्तरिक्ष विज्ञान लेख—साधारण दूरबीन से अन्तरिक्ष वेधशालाओं तक
102 कॉप-14 (कॉन्फ्रेंस ऑफ पार्टीज) अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन पर आधारित विशेष लेख—ग्लोबल वार्मिंग, बंजर भूमि एवं प्लास्टिक कचरा : वैश्विक समस्याएं एवं समाधान
104 पारिस्थितिकी लेख—समुद्र तटीय क्षेत्रों में पाए जाने वाले प्रमुख पारिस्थितिकी तंत्र या पारितंत्र
107 सार संग्रह

वस्तुनिष्ठ सामान्य अध्ययन

111 (i) उत्तर प्रदेश अधीनस्थ सेवा चयन आयोग सम्मिलित अवर अधीनस्थ सेवा (सामान्य चयन) प्रतियोगितात्मक परीक्षा, 2019
122 (ii) केन्द्रीय सशस्त्र पुलिस बल/दिल्ली पुलिस एस.आई. एवं सीआईएसएफ में सहायक उप-निरीक्षक भर्ती परीक्षा, 2018
124 (iii) उत्तराखण्ड बी.एड. प्रवेश परीक्षा, 2019
128 (iv) छत्तीसगढ़ सहायक श्रम पदाधिकारी/श्रम निरीक्षक/श्रम उपनिरीक्षक भर्ती परीक्षा, 2018
136 समसामयिक वस्तुनिष्ठ प्रश्न
139 उद्योग व्यापार जगत्
141 ऐच्छिक विषय— (i) भूगोल—यू.जी.सी.-नेट/जे.आर.एफ. परीक्षा, 2019
148 (ii) समाजशास्त्र—यू.जी.सी.-नेट/जे.आर.एफ. परीक्षा, 2019

विविध/सामान्य

153 वार्षिक रिपोर्ट—2018-19—अन्तरिक्ष विज्ञान और तकनीकी क्षेत्र में अनुसंधान एवं विकास के बढ़ते चरण : नई ऊँचाइयों की ओर
155 तर्कशक्ति—(i) आई.डी.बी.आई. बैंक एक्जीक्यूटिव परीक्षा, 2019
160 (ii) केन्द्रीय सशस्त्र पुलिस बल/दिल्ली पुलिस एस.आई. एवं सीआईएसएफ में सहायक उप-निरीक्षक भर्ती परीक्षा, 2018
164 संख्यात्मक अभियोग्यता—स्टेट बैंक ऑफ इण्डिया पी.ओ. (प्रा.) परीक्षा, 2019
168 क्या आप जानते हैं ?
169 अपना ज्ञान बढ़ाइए
170 सामान्य ज्ञान प्रतियोगिता क्रमांक 194
173 प्रथम पुरस्कृत निबन्ध—चन्द्रयान-II की सफलता के निहितार्थ
175 निबन्ध प्रतियोगिता क्रमांक 485 का परिणाम
176 रोजगार समाचार

प्रतियोगिता दर्पण में प्रकाशित किसी भी सामग्री अथवा चित्र के लिए सम्पादक की सहमति होना आवश्यक नहीं है. –सम्पादक

• E-mail : publisher@pdgroup.in • Website : www.pdgroup.in

स्वावलम्बी बनो!

—साध्वी वैभवश्री 'आत्मा'

खुदी को कर बुलन्द इतना कि
हर तकदीर से पहले
खुदा बंदे से ये पूछे .....
बता तेरी रजा क्या है.

—अल्लामा इक़बाल

एक राजा के यहाँ उसका बचपन का मित्र मिलने आया. देर रात तक वे गपशप कर रहे थे कि मित्र की नजर जलते दीपक पर गई, जो अब बुझने को था, उसका तेल चुक रहा था. यह दृश्य देख वह बोला मैं जरा इस दीप में तेल डाल आऊँ. राजा बोला—आज तुम मेरे अतिथि हो, तुम काम न करो. मैं द्वारपाल को आदेश देता हूँ. राजा ने द्वारपाल को आवाज लगाई किन्तु कोई प्रत्युत्तर नहीं आया. राजा समझ गया कि द्वारपाल को नींद लग गई है. वह स्वयं गद्दी से उठा और तेल डालने पहुँचा तो मित्र बोला—अरे ! आप तो राजा हैं. ये काम आपको शोभा नहीं देता, तभी राजा बोला—अपना काम करने से मैं तो जो हूँ वही रहूँगा. कुछ और थोड़े ही हो जाऊँगा. ये बात सुनकर मित्र को अहसास हुआ कि हम स्वयं को श्रेष्ठ, बड़ा, धनी मानकर परावलम्बी बनते चले जाते हैं. स्वावलम्बन से ही जीना श्रेष्ठ है. स्वावलम्बी कभी छोटा नहीं होता व परावलम्बी कभी बड़ा. आज हम अपनी जिंदगी में झांकें तो, समझ आएगा कि हम कितने अधिक पराधीन (Dependent) होते जा रहे हैं. अक्सर युवा वर्ग अपनी पढ़ाई को इतना बोझ समझ कर करता है कि घरवालों को यह महसूस कराता रहता है कि मैं एक बहुत बड़ा काम कर रहा हूँ इसलिए मेरे लिए आप मेरा हर कार्य करके दें. मेरे लिए खाना पकाने से लेकर जूते साफ करना हो या मेरे कपड़े व्यवस्थित करके रखना हो या बिखरी पुस्तकों को व्यवस्थित करना हो, मैं स्वयं यह कार्य नहीं कर पाऊँगा क्योंकि मैं बहुत व्यस्त हूँ. मैं बहुत भारी काम कर रहा हूँ वो है पढ़ने का. पढ़ाई क्या हुई मानो युद्ध में चढ़ाई हो रही हो. हम सबको कहीं न कहीं खुद को बहुत व्यस्त बताने की आदत पड़ गई है. हम सभी अपने कामों की बहुत वजनदार मानते हैं, भारी, कठिन, जटिल व संघर्ष रूप मानते हैं तथा दूसरों के कार्यों को अपने से सदा कम आंकते हैं. फिर दूसरों से सेवा लेना अपना अधिकार मानते हैं. कभी-कभार उनकी सेवाओं के लिए धन्यवाद कह भी देते होंगे, किन्तु अपनी नजरों में अपने द्वारा किए जा रहे कामों को अधिक महत्व देते हैं और दूसरों के कार्यों को कमतर आँकते हैं. तब हमें लगता है कि हम जो कर रहे हैं वह बहुत महान काम है. इसलिए ये लोग मेरा ख्याल रखें, मेरे छोटे-मोटे कार्यों को निपटा दे रहे हैं तो क्या बड़ा काम कर रहे हैं. बड़ा काम तो मैं कर रहा हूँ. इस प्रकार घमण्ड में भरकर दूसरों पर निर्भर रहना अधिकांश युवाओं की जीवन-शैली बनती जा रही है. जिसके विविध दुष्परिणाम यदा-कदा प्रकट होते ही रहते हैं जैसे कि—

●●●